मूँछ

कहाँ से आती है मूँछ,
किस-किस के चेहरे पर छा जाती है –
काले, सफेद और धूसर धागों से बनी हुई।

नरम दिल वाले की सख्त,
खड़ूस मानव की नरम
मूँछ होती है।

मूँछ को ताव दें
तो दुनिया बदल जाए।

एक मूँछ
होंठों को छिपाती है।
एक मूँछ
रस्सी की तरह
बल खाती है
जिसके धागे निकल रहे हों।

एक मूँछ
केवल एक मूँछ है।

एक मूँछ का बाल
ऐसे गिरता है
जैसे तारा गिर रहा हो।

उत्सुक शर्मा, दसवीं, दिल्ली

सूफी कथा

परम्परा

टोपियों का सौदागर टोपियाँ बेचने दूसरे गाँव जा रहा था। रास्ते में आराम करने एक पेड़ के नीचे रुक गया। हवा के झोंके से आँख लग गई। कुछ देर में उठा तो देखा, टोपियाँ गायब। घबरा गया। सोचने लगा – चोर ले गए होंगे। तभी ऊपर से आवाज़ आई। देखा बन्दरों का झुण्ड पेड़ पर उसकी टोपियाँ लगाए बैठा है। उसने काफी कोशिश की कि बन्दर टोपियाँ लौटा दें। पर सब बेकार। गुस्से में झुँझलाकर उसने अपने सिर की टोपी ज़मीन पर पटक दी। नकलची बन्दरों ने भी वैसा ही किया। सौदागर टोपियाँ समेट कर अपने रास्ते चल पड़ा।

पचास साल बाद उसका पोता, जो खानदानी धँधे में था, टोपियाँ लेकर वहाँ से गुज़रा। पेड़ अब ज़्यादा घना, छायादार हो गया था। पोता भी वहीं रुका। हवा चल रही थी। उसकी भी आँख लग गई।

नींद खुली तो देखा टोपियाँ गायब।

पोते को दादाजी का किस्सा याद आया। सीधे ऊपर देखा। बन्दर टोपियाँ लगाए बैठे थे। अभी वापस लेता हूँ उसने सोचा और अपने सिर की टोपी ज़मीन पर पटक दी। बन्दरों पर कोई असर नहीं हुआ। एक बन्दर बोला, "तुम क्या समझते हो, दादाजी से सीख तुमने ही ली है? हमारे दादे-परदादे हमें कुछ नहीं सिखा गए?"